3. अति सुधो सनेह का मार्ग है

लेखक - धनानंद

रीतियुक्त काव्यधारा के भिरमौर कवि है |

जन्म:- 1689 (आसपास) धया नादिर साह के सैनिकों ने "ने 1739 में धनानंद का धया कर दी।

→ मुगल शासक मोहम्मद शाह रंगीले के पदों पर मूल मुंशी बनकर काम करते थे |

→ धनानंद गायक के साथ-साथ श्रेष्ठ कवि भी थे | ये नर्तकी सुजान से प्यार करते थे |

→ विराम के बाद वृदावन जाकर काव्य रचना शुरू किये।

→ 1739 नादिरशाह सैनिक ने दिल्ली पर आक्रमण किया। तो उस समय धनानंद मोहम्मद शाह रंगीले के यहाँ मुशी पर कार्य करते थे। सैनिक इसे घेर लिया और पूछा जर, जर, जर (सोना) कहाँ है | तब धनानंद ने रज, रज, रज बोला तीन मुठ्ठी धूल दे दिया तब धनानंद को मार दिये |

→ धनानंद प्रेमपीर के कवि है |

→ इनकी कविता में प्रेम की पीड़ा, मस्ती और वियोग देखने को मिला है |

ग्रंथ :- सुजानसागर, विरहलीला, रसकेलि बल्ली आदि। इनके सवैये और धनाकारी भी प्रसिद्ध है |

भाषा - ये ब्रजभाषी थे।

दोहा :- अति सूधो स्नेह को मारग है जहाँ नेकु सयमप बॉक नही।

तहाँ साँचे चलै तज़ि आपनपै झुझुकें कपरी जे निसाँक नही |

अर्थ :- प्रेम का मार्ग अत्यंत सरल है | यहाँ थोड़ी सी भी चतुराई नही चलती है, इस मार्ग पर वही चल सकता है | जिनके मन उदार तथा निर्मल अभिमानी, कपरी तथा शोक करने वाला इस मार्ग पर चलने से झिझकता है, अर्थात डरता है।

धनानंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तै दूसरो आँक नही।

तुम कौन धौं पारी पदे है कहौ मन लेहु पै देहू धराक नही |

अर्थ → धनानंद जी कहते है, प्यारी सुजान सुनो यहाँ एक तुमही हो और कोई नही बोलो तुम कौन -सा पाठ पढती हो | मेरे मन हो मेरे मान को ले लेती है पर अपना दर्शन भी नहीं देते हो।

मो० अँसुवाहिनी लै बरसौ -

दोहा :- परका नहि 'देह को धारी फिशै परजन्य जथारथ है दरसौ |

निधि-नीर सुधार की समान करौ सबकी विधि सज्जनता सरसौ|

अर्थ → हे बादल तुम दूसरो के उपकार के लिए अपना शरीर को धारण करता है | समुंद्र से पानी ले जाकर पानी बरसाकर अपनी सज्जनता का परिचय देता है |

दोहा :- धनानंद जीवनदायक है | कुछ मेरियौ पीर हिऐ परसौ |

कबहू वा बिसासी सुजान के आँगन मो आँसुवाहिनी 'लै बरसौ |

अर्थ → हे जीवनदायक मेरी समस्याओं को भी समझो और मेरी आँसुओं को लेकर उस विश्वव्यापी सुजान के आँगन में वर्षा कर दो |

- Objective –

1. प्रेम की पीर के कवि है?

Ans- धनानद

2. मो० अँसुवाहिनी लै बरसौ के कवि है ?

Ans- धनानंद

3. धनानंद की रचना है ?

Ans - सुजान रसखान

4. कवि परजन्य किसे कहा हर

Ans - बादल

5. धर्मानंद कवि ही

Ans - रितीमुक्ति

6. धनानंद के प्रमुख ग्रंथ है ?

Ans- सुजानसागर, विरहलीला, रसकेलि बल्ली |

7. धनानंद की कविता में किसकी गहरी ज्यंजना है ?

Ans - प्रेम की पीड़ा, मस्ती, वियोग

8. कवि के अनुसार परहित के लिए देह कौन धारण करता है ?

Ans - मेघ

9. कुंजन का अर्थ है ?

Ans - कंबल

Subjective - कविता के साथ

1. कवि प्रेममार्ग को 'अति सुधो' क्यों कहता है ? इन मार्ग की विशेषता क्या है ?

Ans - क्योंकि प्रेममार्ग पर थोड़ी सी चतुराई और टेढ़ेपन की जरूरत नही है, इस मार्ग पर वही चल सकता है जिसका मन सच्चा हो इस मार्ग की विशेषता यह है, कि यहाँ अभिमानी, कपटी व्यक्ति नहीं चल सकता है, या चलने से डरता है |

2. मन लेहू पै देहू धराक नही से कवि का क्या अभिप्राय है ?

Ans - इससे कवि का अभिप्राय यह है कि कवि सुजान से संबंधित करके कहते है, कि हे सुजान तुम मेरे मन को ले लेती हो पर मुझे छयँक भी नही देते है |

3. द्वितीय छंद किसे संबोधित है और क्यों ?

Ans - द्वितीय छंद में कवि बादल को संबंधित करते हुए। क्योंकि कवि को आशा है कि बादल दूसरे के उपकार के लिए दी |अपनी देह को धारण किये घुमतें है तो उसकी भी समस्या पर ध्यान देंगे |

4. परहित के लिए देह कौन धारण करता है ? स्पस्ट कीजिए |

Ans - बादल परहित के लिए ही अपनी देह धारण करता है, क्योंकि बादल समुद्र के खारे जल को भी मीठा बना देता हो |

5. कवि कहाँ अपने आँसुओं को पहुंचाना चाहता है और क्यों ?

Ans - कवि अपने आँसूओ को सुजाता के आँगन में पहुँचाना चाहता है | ताकि उसे भी पता चले कि कवि वर्तमान में किस समस्या से गुजर रहे है |

6. व्याख्या करें |

(क) यहाँ एक तै दूसरौ आँक नहीं |

Ans - यहाँ एक तुम्ही हो दूसरा कोई नहीं |